3 (Sem–2/CBCS) HIN HG/RC 1

2023

HINDI

Paper : HIN–HG/RC–2016

(मध्यकालीन हिंदी कविता)

(Honours Generic/Regular Course)

Full Marks : 80

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×10=10

(क) कबीरदास के गुरु कौन थे?

(ख) तुलसीदास भक्तिकालीन किस काव्यधारा के कवि हैं?

(ग) "अनबूड़े बूड़े, तरे जे बूड़े सब अंग।" इसमें कौन-सा अलंकार निहित है?

(घ) 'भ्रमरगीत' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(ङ) 'बिहारी सतसई' में प्रधानतः कौन-सा रस विद्यमान है?

(च) घनानंद की किसी एक साहित्यिक कृति का नाम बताइए।

(छ) 'अभिनव वाल्मीकि' उपाधि से भक्तिकाल के कौन कवि सम्मानित हैं?

(ज) 'वात्सल्य रस के सम्राट्' किन्हें कहा जाता है?

(झ) "अति सूधो सनेह को मारग है जहँ नेकु सयानप बाँक नहीं।" इस पंक्ति के रचनाकार कौन हैं।

(ञ) 'बीजक' के रचयिता कौन हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 2×5=10

(क) घनानंद की कविता की कोई दो शिल्पगत विशेषताएँ बताइए।

(ख) सूरदास के किन्हीं दो ग्रंथों का नामोल्लेख कीजिए।

(ग) कबीरदास की काव्य-भाषा में हिंदी की किन बोलियों के शब्द सम्मिलित हैं?

(घ) "सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर"—का आशय क्या है?

(ङ) तुलसीदास के माता-पिता कौन थे?

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **चार** के उत्तर संक्षेप में दीजिए : 5×4=20

(क) 'भ्रमरगीत' के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

(ख) कबीरदास की रहस्य-भावना को स्पष्ट कीजिए।

(ग) निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

"लिखन बैठि जाकी सबी, गहि-गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर।।"

(घ) घनानंद को 'प्रेम की पीर का कवि' क्यों कहा जाता है?

(ङ) " 'भरत विनय प्रसंग' में कवि ने एक आदर्श भाई का रूप प्रस्तुत किया है।" प्रस्तुत कथन की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

(च) निम्नलिखित दोहे का संदर्भ सहित आशय स्पष्ट कीजिए :

"नीकी दई अनाकनी, फीकी परि गुहारि।
तज्यौ मनौ तारन-विरदु, बारक बारनु तारि।।"

4. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10

मुरली गति बिपरीति कराई।
तिहूं भुवन भरि नाद समान्यो राधारमन बजाई।
बछरा थन नाहीं मुख परसत, चरत नहीं तृन धेनु।
जमुना उलटी धार चली बहि, पवन थकित सुनि बेनु।
बिह्वल भए नहीं सुधि काहू, सुर गंध्रव बनर नारि।
सूरदास सब चकित जहाँ तह ब्रज जुवतिन सुखकारि।।

अथवा

जाउँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे?
काको नाम पतितपावन जग केहि अति दीन पियारे?
कौने देव बराइ बिरद हित हठि हठि अधम उधारे?
खग मृग ब्याध पषान बिटप जड़ जवन कवन सुर तारे?
देव दनुज मुनि नाग मनुज सब मायाबिबस बिचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे?

5. निम्नलिखित प्रश्नों के सम्यक् उत्तर दीजिए : 10×3=30

(क) कबीर-काव्य के प्रतिपाद्य पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

अथवा

सूरदास-विरचित भ्रमरगीत-प्रसंग के भाव-सौष्ठव का आकलन कीजिए।

(ख) गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-भावना की विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।

अथवा

तुलसीदास के काव्य की लोकप्रियता के कारणों पर प्रकाश डालिए।

(ग) " 'बिहारी सतसई' शृंगार, भक्ति और नीति की त्रिवेणी है।" प्रस्तुत कथन की उपयुक्तता पर विचार कीजिए।

अथवा

घनानंन्द-काव्य की मूलभूत विषय-वस्तु पर उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।

★ ★ ★